संपादक का नोट

यीशु मसीह के नाम से मेरे सभी भाइयों और बहनों को अभिवादन करती हूँ। समय तेजी से उड़ रहा है और इससे पहले कि हम पालक झपके एक और नए महीने में हम आ गए। हमारे अच्छे प्रभु की इच्छा हमारे प्रत्येक के जीवन में पूरी हों।

इब्रानियों 6: 3–6 ''3 यदि परमेश्वर चाहे तो हम यही करेंगे। 4 क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं, 5 और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके हैं, 6 यदि वे भटक जाएँ तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अनहोना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं।'' पवित्र बाइबल कहता है कि जिन लोगों ने प्रकाश को देखा है, जिन्होंने पवित्र आत्मा के उपहारों का स्वाद चखा है, परमेश्वर के जीवित वचन को कलीसियाओं में प्रचारित किया है और आशीर्वाद प्राप्त किया है, यदि बाद में जीवन में वे पीछे हटते हैं, तो वे ऐसे लोग हैं जो यीशु को हर दिन बार–बार क्रूस पर चढ़ाते हैं।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले एक महान नबी थे। उनके जैसा कोई न था, न ही मूसा, अब्राहम, एलीशा, दाऊद, नहेमायाह या यशायाह थे। वह इस पृथ्वी पर सबसे बड़े नबी थे, फिर भी यीशु ने खुद कहा कि स्वर्ग के राज्य में, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला इन सभी नबी में से सबसे छोटा होगा। मत्ती 11:11 ''मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उससे बड़ा है।'' इसका क्या कारण है? मत्ती 11: 3–4 ''3 ''क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट जोहें?'' 4 यीशु ने उत्तर दिया, ''जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो,'' यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला स्वयं परमेश्वर द्वारा इस धरती पर यीशु के आने से पहले स्वर्ग के मार्ग को दिखाने और बनाने के लिए भेजा गया था। यूहन्ना द्वारा यीशु मसीह को बपतिस्मा दिया गया था, और उस समय यूहन्ना ने खुद अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाया और यह कहकर दुनिया के लिए यीशु का परिचय दिया कि 'यह सच्चा परमेश्वर है और वह हमें हमारे पापों से ऊपर उठाएगा।' लेकिन दुर्भाग्यवश, जब यूहन्ना

बपतिस्मा देनेवाले पर मुसीबत आई और जब उन्हें पकड़ लिया गया और जेल में डाल दिया गया; उन्होंने क्या किया? मत्ती 11: 3 ''क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट जोहें?'' यह कितनी दुखद बात है! जब यूहन्ना के जीवन की स्थिति बदल गई, तो भविष्यवक्ता, जिसने एक बार दुनिया को दिखाया कि 'यीशु मसीह ही मार्ग है', अपने आप पर संदेह किया और चेलों को यीशु से यह पूछने के लिए भेजा कि क्या यह वही है जिसके आने की बाट जोह रहे है, या हम दूसरे की तलाश करें?' यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का यीशु में अविश्वास करने का क्या कारण था? परिस्थितिजन्य दुःख, पीड़ा और विपत्ति इस अविश्वास का कारण बनी। जब इस तरह का अविश्वास किसी के जीवन में आता है, तो परमेश्वर का वचन कहता है, वह लड़का हो या लड़की स्वर्ग में छोटे से छोटा बन जाएगा।

लेकिन जब पौलुस और सीलास पर उसी तरह का दुःख और दर्द आया, जब उन्हें जंजीर में डालकर जेल में डाल दिया गया था, तो उन्होंने क्या किया? उन्होंने जेल में परमेश्वर की स्तुति और महिमा की और जब मृत्यु की तलवार उनके ऊपर थी, तब भी उन्होंने अपना विश्वास नहीं खोया। प्रेरितों के काम 16: 25 ''आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी उनकी सुन रहे थे।'' उसके बाद हम जानते हैं कि उन्होंने यीशु के बारे में कितने शानदार तरीके से गवाही दी प्रेरितों के काम 16:31 ''उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।'' यह वही है जो यीशु हम में से प्रत्येक को करने की उम्मीद करते है!

जब हमारे जीवन में परिस्थितियाँ अच्छी होती हैं, तो परमेश्वर की स्तुति करना बहुत आसान होता है। लेकिन दुःख और दर्द के समय और जीवन में सबसे विपत्ति परिस्थितियों में, जो लोग प्रभु की स्तुति और महिमा करना जारी रखते हैं, वे 'प्रभु के बच्चे' कहलाने के योग्य हैं और उन्हें प्रभु द्वारा सही समय में उठाया जाएगा।

इसलिए, प्यारे भाई और बहनों, हमेशा याद रखें कि हमारे जीवन में परिस्थितियाँ, दर्द, दुःख और तकलीफें आती हैं और चली जाती हैं, लेकिन उस समय इस्राएलियों की तरह नहीं बनना चाहिए जो हमारे अच्छे प्रभु के खिलाफ गुरगुरावट करे। उस समय केवल एक चीज जो आपको करनी चाहिए वह यह है कि उन सभी आशीषों को याद रखें जो प्रभु ने आपको सभी स्थितियों में दी है और प्रभु की स्तुति हर परिस्थिति में करनी चाहिए। तब वह आपके विश्वास, धैर्य और उनके प्रति प्रेम को देखेंगे और आपको, समय के साथ, बहुतायत से आशीर्वाद देंगे।

जब तक हम फिर से मिलेंगे तब तक प्रभु की स्तुति करते रहें।

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

प्रभु की आज्ञा का पालन करें – वह जानता हैं हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है।

भजन संहिता 89: 19 ''एक समय तू ने अपने भक्त को दर्शन देकर बातें की; और कहा, मैं ने सहायता करने का भार एक वीर पर रखा है, और प्रजा में से एक को चुन कर बढ़ाया है।'' हमारे प्रभु परमेश्वर हमें एक दर्शन देते है, जब वह हमें एक दर्शन देते है तो वह हमें इस दर्शन को पूरा करने के लिए सहायता, शक्ति, ज्ञान देते है। लेकिन अंत में, हमारे अपने हाथों में दर्शन की अंतिम उपलब्धि है, हमें अंत तक जीत के लिए लड़ना चाहिए। प्रभु ने पहला दर्शन कनान देश का दर्शन दिया, जो की तेरह का था। तेरह ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और अपनी पत्नी, पुत्र अब्राहम, बहू और पोते लूत को साथ ले गया। प्रभु ने उसे और उसके परिवार को हर संभव मदद दी, ताकि वह वादे किए गए देश में जा सके। प्रभु ने तेरह को शक्ति और ज्ञान भी दिया। लेकिन रास्ते में, जैसे ही वे हारान के पास से गुज़रे, तेराह ने इसे एक खूबसूरत देश पाया, उन्हें बसने के लिए सब कुछ अच्छा लगा, इसलिए उन्होंने अपने परिवार के साथ हारान में ही बसने का फैसला किया, और उस भूमी को भुला दिया जिसका वादा प्रभु ने उनसे किया था। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 11: 31 ''तेरह अपने पुत्र अब्राम, और अपने पोते लूत, जो हारान का पुत्र था, और अपनी बहू सारै, जो उसके पुत्र अब्राम की पत्नी थी, इन सभों को लेकर कसदियों के ऊर नगर से निकल कनान देश जाने को चला; पर हारान नामक देश में पहुँचकर वहीं रहने लगा।'' जब हम एक दर्शन देखते हैं, तो हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह स्थान जहाँ से हमें दर्शन भेजा गया है, वहाँ पिता परमेश्वर, धर्मी लोग, बुद्धिमान और जीवन की पुस्तक रहती है जिसमें हमारे नाम भी लिखे गए हैं। इस प्रकार, हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि, हमें दिए गए प्रभु के दर्शन को पूरा करना महत्वपूर्ण है, हमें यह भी पता होना चाहिए कि यह पिता परमेश्वर के अलावा इस जगह पर है कि यीशु मसीह मृत्यु के बाद चले गए और पिता परमेश्वर के दाईं ओर बैठे हैं। याद रखें – – 'एक दर्शन भविष्यद्वाणी है, भविष्यद्वाणी एक वादा है'। यीशु मसीह ने हमारे जीवन के बारे में भविष्यवाणी की, यूहन्ना 14: 2–3 ''2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। 3 और यदि

मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।'' हम जानते हैं कि यीशु पिता परमेश्वर के दाईं ओर बैठे है उनके कई धर्मी लोगों के साथ, परमेश्वर के प्रियजनों और उनके जीवन में दिए गए दर्शन को पूरा करने वाले लोगों के साथ–साथ हैं। जीवन की पुस्तक में उन सभी लोगों के नाम हैं जिन्होंने इस धरती पर अपनी जीत हासिल की है। इसलिए, जब हम उस दर्शन या वचन को पूरा करते हैं जो प्रभु ने हमारे जीवन में दिया है, तो उसने हमारे लिए अलग मुकुट रखे हैं। इस प्रकार, जब हम अपने जीवन में प्रभु के दर्शन को पूरा करते हैं, तो वह हमें ''जीवन का मुकुट, धार्मिकता का मुकुट और महिमा का मुकुट'' प्रदान करेंगे। लेकिन, हम ऊपर पढ़ चुके हैं कि तेरह ने पूरी तरह से उस दर्शन को पूरा नहीं किया जो प्रभु ने उसे दिखाया था। इस प्रकार, जब तेरह ने हारान के देश में रहने का फैसला किया, तो यह वही स्थान था कि वह वहां मर गया। उत्पत्ति 11: 32 ''जब तेरह दो सौ पांच वर्ष का हुआ, तब वह हारान देश में मर गया।'' इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने जीवन में प्रभु के दर्शन, भविष्यवाणी और वचन को पूरा करें। जब हम हमारे लिए प्रभु के दर्शन को पूरा नहीं करते हैं, तो आध्यात्मिक रूप से हम इस दुनिया में मरे हुए हैं।

हम आदम और हव्वा की कहानी जानते हैं, प्रभु ने उन्हें एक दर्शन दिया था अर्थात् अदन के वाटिका में सभी पेड़ों के फल खाएं, सिवाय ज्ञान के पेड़ के। लेकिन जिस क्षण आदम और हव्वा ने प्रभु की अवज्ञा की, वे आध्यात्मिक रूप से मर गए और प्रभु के सामने नग्न हो गए। हमारे जीवन में भी, जिस क्षण हम अपने जीवन में प्रभु के दर्शन, भविष्यवाणी और वचन की अवज्ञा करते हैं, हम उसी क्षण आध्यात्मिक रूप से मर जाते हैं। जैसे कि तेरह हारान में मर गया, क्योंकि उसने वादा किया हुआ कनान के बारे में प्रभु के दर्शन की अवहेलना की। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 3: 7–11 ''7 तब उन दोनों की आंखे खुल गई, और उन को मालूम हुआ कि वे नंगे है; सो उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये। 8 तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था उसका शब्द उन को सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। 9 तब यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर आदम से पूछा, तू कहां है? 10 उसने कहा, मैं तेरा शब्द बारी में सुन कर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया। 11 उसने कहा, ''किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे मना किया था, क्या तू ने उसका फल खाया है?'' परमेश्वर के बच्चों के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि वे परमेश्वर के दर्शन, भविष्यवाणी और वादे पर ध्यान दें। आइए हम पढ़ते हैं 1 कुरिन्थियों 15: 19 ''यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।'' हमें निरंतर प्रभु के दर्शन, वचन और भविष्यवाणी के लिए सचेत रहना चाहिए जो हमें दिया गया हो। तेरह की मृत्यु के बाद, प्रभु ने अब्राहम को वही अधूरे दर्शन को बताया। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा ''इस देश से बाहर आ जाओ, अपने पिता के घर और परिवार से दूर, वादे किए हुए उस

भूमि पर जाओ जो मैं तुम्हें दिखाऊंगा''। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 12: 1 ''यहोवा ने अब्राम से कहा, अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।'' यहाँ हम देखते हैं कि परमेश्वर अब्राहम को वही अधूरा दर्शन दिखाते है, परमेश्वर ने अब्राहम से स्पष्ट रूप से कहा था ''अपने पिता के घर को छोड़ दो और अपने पिता के घर को भूल जाओ और चले जाओ''। ऐसा इसलिए था क्योंकि तेरह ने प्रभु की अवज्ञा की और प्रभु के दर्शन, भविष्यवाणी और वचन को पूरा नहीं किया।

हमारे जीवन में भी, जब कोई प्रभु के दर्शन या वचन को पूरा नहीं करता है, तो प्रभु हमें ऐसे लोगों से, अच्छे के लिए अलग करते है। जिस तरह प्रभु ने अब्राहम से कहा कि वह अपने पिता को भूल जाए, क्योंकि उसने प्रभु की अवज्ञा की और इस प्रकार प्रभु ने उसे अपने पिता के देश और घर से अलग होने के लिए कहा। आइए पढ़ें मत्ती 9: 16–17 ''16 कोरे कपड़े का पैबन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह पैबन्द उस वस्त्र से कुछ और खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है। 17 और लोग नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते हैं, क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नष्ट हो जाती हैं; परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरतें हैं और वे दोनों बचे रहते हैं।'' वही प्रभु जिसने दस आज्ञाओं में लिखा था ''अपने पिता और माता का सम्मान करो'', अब अब्राहम से कहते है कि वह अपने पिता का देश और अपना घर छोड़ दे क्योंकि उसने परमेश्वर की अवज्ञा की थी। प्रभु ने तेरह को जो दर्शन दिया, वह वादा किया हुआ भूमि था – शहद और दूध की भूमि थी। सिय्योन की भूमि को उनके धर्मी बच्चों के लिए चुना गया था। यह वह दर्शन था जिसे परमेश्वर ने तेरह को दिया था। लेकिन तेरह ने हारान में रहने का फैसला किया, क्योंकि यह देश फलदाई था और उसकी आँखों में प्रसन्नता लाती थी, जहाँ उसने सुंदर महिलाओं को देखा और यह भी देखा कि वहाँ खाने के लिए भरपूर भोजन था। इस प्रकार, परमेश्वर ने अब्राहम को आज्ञा दी कि वह अपने पिता को भूल जाए, जिस भूमि को उसके पिता तेरह और उसके पूरे परिवार ने चुना था। अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और अपनी पत्नी को साथ लिया और लूत भी उनके साथ हो लिया। बाद में, रास्ते में हमने देखा कि लूत ने अब्राहम को बीच रास्ते में छोड़ दिया। वह उससे अलग हो गया और बसने के लिए सदोम और अमोरा की भूमि को चुना। हम जानते हैं कि अंत में क्या हुआ, कैसे इस देश को प्रभु ने नष्ट कर दिया। यह हमारे जीवन में भी बहुत महत्वपूर्ण है कि हम प्रभु द्वारा दिए गए दर्शन, भविष्यवाणी और वचन को पूरा करें। आइए हम पढ़ते हैं प्रकाशितवाक्य 2: 26–29 ''26 जो जय पाए, और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति जाति के लोगों पर अधिकार दूंगा। 27 और वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बरतन चकनाचूर हो जाते है: जैसे कि मै ने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है। 28 और मैं उसे भोर का तारा दूंगा। 29 जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'' आइए हम यह भी पढ़ें

प्रकाशितवाक्य 3: 5 ''जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा, पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूंगा।'' प्रकाशितवाक्य 3: 21–22 ''21 जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पा कर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया। 22 जिस के कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।''

अपने जीवन में हमें प्रभु के लिए जीने का प्रयास करना चाहिए और अंत तक इस बुरी दुनिया में जीत हासिल करना चाहिए। हमारे जीवन में प्रभु के दर्शन, भविष्यवाणी और वचन को पूरा करना बहुत महत्वपूर्ण है। तेरह के पास एक दर्शन था, लेकिन रास्ते में जब वह हारान से गुजरता है, तो यह स्थान उसके लिए एक जाल बन गया और वह इस देश में रहना चाहता था और वह उस दर्शन को भूल गया जिसे प्रभु ने उसे दिया था। इस प्रकार, अंत में वह इसी देश में मर गया। हम लूत की कहानी को भी जानते हैं कि वह अब्राहम से कैसे अलग हुआ और सदोम और अमोरा में बस गया और इस देश को प्रभु द्वारा नष्ट हुआ। सदोम और अमोरा लूत के लिए एक जाल बन गया। हम सुलैमान की कहानी भी जानते हैं, प्रभु ने उसे पराक्रमी ज्ञान का आशीर्वाद दिया था, उसके अलावा इस दुनिया में कोई दूसरा बुद्धिमान व्यक्ति नहीं था। प्रभु ने उसे कई दर्शन, भविष्यवाणियां और वादे दिखाए, लेकिन उसने मूर्तिपूजा करने वाली महिलाओं पर अपना दिल लगाया, इस प्रकार ये महिलाएं सोलोमन के जीवन में जाल बन गईं। सुलैमान ने जीवन की दौड़ नहीं जीती बल्कि इस दुनिया में वह हार गया। एक और उदाहरण यहूदा इस्करियोती के जीवन का है, वह यीशु मसीह द्वारा चुने गए 12 शिष्यों में से एक था। वह यीशु और अन्य शिष्यों के बीच रहता था, बाकी शिष्यों की तरह अद्भुत काम करता था। लेकिन जिस दिन वह तीस चाँदी के सिक्कों के लिए ललचा गया, उसने यीशु मसीह को दुश्मनों के हाथों धोखा दिया। प्रलोभन उसके जीवन का सबसे बड़ा जाल था। ऊपर वर्णित सभी पुरुष वे हैं जो इस दुनिया में खो गए थे। वे प्रभु के दर्शन, भविष्यवाणी और उन्हें दिए गए वचन को पूरा करने में असमर्थ थे। इस प्रकार, हमें अपने जीवन में भी बहुत सावधान रहना चाहिए कि हमें इस दुनिया में किसी भी चीज़ से अधिक प्रभु से प्रेम करना चाहिए।

प्रभु का दर्शन, भविष्यवाणी और वादा हमें अपने दिल, दिमाग और शक्ति के साथ और महान विश्वास के साथ पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास की अलग–अलग तरह से जाँच की, जब परमेश्वर ने उसे अपने पहले पुत्र इसहाक का बलिदान करने के लिए कहा तो उसका परीक्षण किया गया। लेकिन अब्राहम ने अपना पूरा विश्वास प्रभु के दर्शन, भविष्यवाणी और वचन में दिया था। इस प्रकार, अब्राहम ने अपने जीवन में हर

परीक्षा में जीत हासिल की, उसने हर दर्शन, भविष्यवाणी और वचन को पूरा किया जिसे प्रभु ने उसे दिया था। अपनी जीत के बाद, अंत में, प्रभु ने उसका नाम 'अब्राम' से बदलकर 'अब्राहम' रखा जिसका अर्थ है 'जातियों के समूह का मूलपिता'। आइए हम पढ़ें उत्पत्ति 17: 5–6 ''5 इसलिये अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा, परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है। 6 मैं तुझे अत्यन्त फलवन्त करूँगा, और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूँगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।'' परमेश्वर ने अब्राहम से यह भी वादा किया कि इन राष्ट्रों से कई राजा उत्पन्न होंगे।

यीशु मसीह ने भी अपने लोगों के साथ एक 'वाचा' बनाई थी, आइए हम पढ़ें 1 कुरिन्थियों 11 : ''इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया और कहा, "यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है : जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।'' यीशु मसीह ने हमारे लिए अपने जीवन को क्रूस पर बलिदान कर दिया। वह हमसे निः स्वार्थ प्रेम करते थे और उनका प्रेम परिपूर्ण था। यीशु ने कहा कि ''हर बार जब तुम मेरे साथ अपनी वाचा को नया करते हो, तो अपने लिए मेरे गहरे प्रेम को याद रखो। हमें जीवन के उपहार को भी याद रखना चाहिए जो हमें उनसे मिले हैं। हमें प्रभु द्वारा अपने लिए दिए गए दर्शन, भविष्यवाणी और वचन को भी याद रखना चाहिए। हमारे जीवन में परमेश्वर के अद्भुत कामों और कार्यों को याद रखना हमेशा महत्वपूर्ण होता है। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक वाचा भी बनाई, आइए पढ़ते हैं उत्पत्ति 17: 7 ''और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात् पीढ़ी–पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग–युग की वाचा बाँधता हूँ, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात् तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूँगा।'' अब्राहम के साथ प्रभु की वाचा आज भी पीढ़ियों से पीढ़ियों के लिए अच्छी है, यानी की आप और मैं भी। हम अब्राहम के बच्चे हैं और हमारी कई पीढ़ियों के साथ भी, इसलिए यीशु के लौटने तक, हमें इस दुनिया में मेहनती होना चाहिए, ताकि हमारे जीवन में प्रभु के हर दर्शन, भविष्यवाणी और वादे को पूरा किया जा सके, जैसे कि अब्राहम ने किया था। चलो फिर से पढ़ें उत्पत्ति 17: 7 ''और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात् पीढ़ी–पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग–युग की वाचा बाँधता हूँ, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात् तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूँगा।'' परमेश्वर ने अब्राहम को तम्बू से बाहर निकाला और उसे उसकी पीढ़ी दिखाई, आइए पढ़ें उत्पत्ति 15: 5 ''और उसने उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उन को गिन सकता है? फिर उसने उससे कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा।'' परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि तुम्हारी पीढ़ियाँ इस तरह रहेंगी – ''अब स्वर्ग की ओर देखो, यदि तुम सितारों को गिन सकते हो, तो उन्हें गिनों! क्योंकि तुम्हारे वंशज भी ऐसे ही होंगे।'' दानिय्येल 12: 3 ''तब सिखाने वालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा की नाईं प्रकाशमान रहेंगे।'' जैसे परमेश्वर ने अब्राहम को दिखाया कि उसकी पीढ़ियाँ आकाश के तारे जैसी होंगी, वैसे ही दानिय्येल भी कहता है कि धर्मी और मेहनती लोग, स्वर्ग के सितारों की तरह होंगे। इस

प्रकार, हम अब्राहम की पीढ़ी के रूप में, प्रभु के एक महान वादे के साथ, हमारे जीवन में कभी भी प्रभु के दर्शन या भविष्यवाणी का त्याग नहीं करना चाहिए। अंत तक हमें परमेश्वर के साथ बने रहना चाहिए और जीवन में विभिन्न परीक्षण और कष्टों से गुजरने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें निश्चिंत होना चाहिए, कि प्रभु हमें जीवन के इन सभी परीक्षणों और क्लेशों से जीत दिलाएंगे। इब्रानियों अध्याय 11 हमें सिखाता है कि परमेश्वर के लोगों ने अपने जीवन में प्रभु के दर्शन और भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए कैसे कष्ट उठाए। प्रभु लगातार उनके साथ थे, उन्हें इसे पूरा करने के लिए मदद और समर्थन, शक्ति और ज्ञान दिया। लेकिन अंत में, दर्शन और भविष्यवाणी को पूरा करने और पूरा करने की इच्छा, उनके अपने हाथों में थी। इसी तरह, हमारे पास भी अपने जीवन में प्रभु के दर्शन और वचन को पूरा करने के लिए बहुत विश्वास और शक्ति होनी चाहिए। प्रभु हमारी मदद करेंगे और हमें रास्ते में मजबूत करेंगे। आइए पढ़ें इब्रानियों 2: 10 ''क्योंकि जिस के लिये सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुंचाए, तो उन के उद्धार के कर्ता को दुख उठाने के द्वारा सिद्ध करे।'' हमारा काम आज यह है कि हम इस दुनिया के नश्वरों को प्रभु की बचाव कृपा के लिए लाएँ। हमें उन्हें रास्ता दिखाना चाहिए। आज भी कई लोग इस दुनिया के अंधकार में हैं, यदि वे अपने जीवन के अंत में अपने पापों को जारी रखते हैं, तो वे नरक की आग में नष्ट हो जाएंगे। इसलिए आज के समय में, हमारे कामों को इन विनाशकारी आत्माओं को बचाना होगा। 2 तीमुथियुस 4: 10 ''क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जान कर मुझे छोड़ दिया है, और थिस्सलुनीके को चला गया है, और क्रेसकेंस गलतिया को और तीतुस दलमतिया को चला गया है।'' हमें हमेशा अपने जीवन में प्रभु के दर्शन को पूरा करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए। हमें तेरह की तरह नहीं होना चाहिए, जिसने मध्य मार्ग में ही इनकार कर दिया और हारान में बस गया, यह उसके लिए एक जाल बन गया। सुलैमान महान बुद्धि के साथ धन्य था, उसके जैसा कोई दूसरा बुद्धिमान व्यक्ति नहीं था, लेकिन वह इसलिए मर गया क्योंकि उसने मूर्तिपूजा करने वाली महिलाओं से शादी की और उनके देवताओं की पूजा करने लगा। हमने लूत को भी देखा, वह अब्राहम से अलग हो गया और सदोम और अमोरा में बस गया, इस तरह प्रभु को इस भूमि को नष्ट करना पड़ा जब इस भूमि में पाप बढ़ गया। हमने यहूदा इस्करियोती के जीवन को भी देखा, वह यीशु मसीह को धोखा देने के लिए 30 सिक्कों के साथ लुभाया गया था। यह उसके जीवन का एक जाल बन गया। यहूदा ने खुद को एक पेड़ की चोटी से उल्टा लटका दिया और खुद को मार डाला।

हमें उस नई वाचा को याद रखना चाहिए जिसे परमेश्वर ने अपने बच्चों से वादा किया था। इसलिए, जब भी हम परमेश्वर के साथ अपनी वाचा को नया करने के लिए आते हैं, हमें प्रभु का दर्शन, और भविष्यवाणी, हमारे लिए वचन को याद रखना चाहिए। जब प्रभु ने इस धरती को छोड़ दिया, तो परमेश्वर का वादा क्या था, यीशु ने कहा, ''मैं तुम्हें अपने पिता के घर

वापस ले जाऊंगा और तुम्हें पिता परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा दूंगा।'' तब तक इस दुनिया में एक अच्छा जीवन जिएं और परीक्षण और क्लेशों को दूर करें और जीवन की हर लड़ाई जीतें''। इस प्रकार, हमें परमेश्वर के नाम की महिमा करनी चाहिए और इस धरती पर उनके साक्षी बनना चाहिए। अंत में, जब हम युद्ध जीत जायेंगे, तो हम जीवन का मुकुट प्राप्त करेंगे और पिता परमेश्वर के दाईं ओर बैठने में भी सक्षम होंगे। प्रभु हमें एक स्तंभ बना देंगे, हमें अधिकार देंगे, हमें राजा और याजक बनाएंगे। आइए हम प्रेरितों के काम को पढ़ें और देखें कि प्रेरित पौलुस ने देमास के बारे में क्या कहा। प्रेरितों के काम 1: 8 ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।'' लेकिन, देमास प्रभु से अधिक दुनिया से प्यार करता था, इस प्रकार उसने पौलुस को छोड़ दिया और थिस्सलुनीके चला गया। वह अपनी आँखों से जो कुछ भी देख सकता था उसे प्यार करता था और परमेश्वर के काम को पीछे छोड़ कर चला गया। देमास ने प्रभु को धोखा दिया और परमेश्वर के कार्यों और उनके लोगों को छोड़ दिया और उनसे अलग हो गया। लेकिन हमारे लिए प्रभु का वादा क्या है – कि हम ''चुने हुए पीढ़ी, याजक, राजा और नबी'' हैं। हमारा एकमात्र काम अब जल्द से जल्द भटके हुए लोगों को उनकी सचेत अनुग्रह पर लाना है। प्रेरितों के काम 1: 8 ''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।'' हम इस पृथ्वी के अंत तक 'प्रभु' के गवाही होंगे। यह दर्शन, भविष्यवाणी और वादा किसके लिए दिया गया है? यह वादा प्रभु के चुने हुए पीढ़ियों के लिए है। परमेश्वर अपने दर्शन, भविष्यवाणी और वचन देते है, ताकि उनकी सभा बढ़े। जो उनके वचन और इस मंदिर में गहरे निहित हैं, उन्हें कोई भी इस जगह से नहीं हटा सकता है। लेकिन जो आप गहरी जड़ें नहीं हैं वे जड़ से उखाड़ दिए जाएंगे। हम लोगों को उनके द्वारा धारण किए गए फलों से पहचानते हैं, हमें आत्मा के फलों को पहचानने में सक्षम होना चाहिए। जब पवित्र आत्मा हमारे ऊपर आती है, तो परमेश्वर हमें उसकी महिमा के लिए उपयोग करेंगे। प्रभु हमारी सहायता करेंगे, हमें बलवंत करेंगे, हमें उनके कार्यों को करने के लिए ज्ञान से भर देंगे और वह अकेले ही दुनिया के सभी छोरों पर महिमा होंगे। जीवन की पुस्तक से हमारे नाम कभी नहीं मिटेंगे, जब हमारे पास उसकी सेवा करने की ज्वलंत इच्छा होगी और वह हमें अपने जीवन में उनके दर्शन, वचन और भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए आवश्यक सभी सहायता प्रदान करेंगे। लेकिन याद रखें, अंतिम निर्णय हमारे अपने हाथों में है।

प्रभु परमेश्वर हम में से हर एक को आशीर्वाद दे। प्रभु की स्तुति हो !

पास्टर सरोजा म।